पाठ - 38

J6E29Z

जमशेद जी नसरवान जी टाटा

स्काटलैण्ड के प्रसिद्ध लेखक कारलाइल ने अपने एक भाषण में कहा था-"जिस देश का लोहे पर नियंत्रण हो जाता है उसका शीघ्र ही सोने पर नियंत्रण हो जाता है।" मैनचेस्टर (लंदन) में दिये उनके इस भाषण को सुनकर एक नवयुवक बहुत प्रभावित हुआ। उसने अपने व्यापार को एक नयी दिषा दी और आगे चलकर भारत के औद्योगिक विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बन गया। इस नवयुवक का नाम जमषेद जी नसरवान जी टाटा था।

जमशेद जी नसरवान जी टाटा का जन्म गुजरात के एक पारसी परिवार में 3 मार्च 1839 ई0 को हुआ था। उनकी प्रारम्भिक षिक्षा घर पर हुई। बाद में इनके पिता इन्हें मुम्बई ले गए। उस समय उनकी आयु 13 वर्ष की थी। वहाँ उन्होंने पहले स्थानीय पुरोहितों से पढ़ा। आगे की पढ़ाई 'एल्फिस्टन कालेज' से पूरी की। कालेज में अध्ययन के दौरान ही इनका विवाह 'हीराबाई' से कर दिया गया। सन् 1856 ई0 में उनके पुत्र दोराब जी का जन्म हुआ।

जमशेद जी ने शिक्षा पूरी करने के बाद एक वकील के साथ काम करना आरम्भ किया किन्तु उसमें उनका मन नहीं लगा। उन्होंने वकील का दफ्तर छोड़कर अपने पिता के व्यवसाय में हाथ बँटाना उचित समझा। व्यवसाय में उन्हें बहुत रुचि थी। अतः वे सफल व्यवसायी बनने के गुर शीघ्र ही सीख गए। उन्होंने व्यापार की बारीकियों को समझा। व्यापार के प्रति बेटे की लगन और कर्मठता देखकर नसरवान जी बहुत प्रसन्न थे। अब वे अपना व्यवसाय भारत से बाहर विदेषों में भी फैलाना चाहते थे। इस उद्देष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने जमषेद जी को चीन भेजा। जमषेद जी ने हांग कांग और शंघाई जैसे बड़े नगरों में अपने व्यापार की शाखाएँ खोलीं। उन्होंने चीन में रहकर वहाँ की अर्थ और व्यापार व्यवस्था का भी अध्ययन किया।

अपने व्यापार को विस्तार देने की कड़ी में वे लन्दन भी गए। उस समय उनकी उम्र केवल 25 वर्ष थी।उन्होंने लंदन में सूती वस्त्र उद्योग पर अधिक ध्यान दिया। इस सम्बंध में उन्होंने

लंकाषायर और मैनचेस्टर नगरों की यात्राएँ कीं। यह नगर वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ वे चार वर्ष तक वस्त्र उद्योग से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करते रहे।
स्वदेष लौटने पर उन्होंने पाया कि उनके पिता का व्यवसाय अच्छी स्थिति में नहीं है। उनकी फर्म पर बाजार के कर्ज बढ़ते जा रहे थे। बाजार में उनकी साख गिर रही थी। इस कठिन समय में पिता और पुत्र ने अपनी योग्यता और सूझबूझ का परिचय देते हुए एक कठिन परन्तु सही निर्णय लिया। उन्होंने अपना मकान व कुछ निजी सम्पत्ति बेचकर कर्जों की अदायगी कर दी। इससे एक तो व्यापारियों का विष्वास उनकी फर्म में बढ़ गया दूसरे भावी प्रगति के द्वार भी खुल गए। उन दिनों अपने देष में कपड़े की मिलंे कम थीं। जो मिलें थीं भी उनमें मोटे कपड़े तैयार होते थे।

जमषेद जी भारत में लंकाषायर और मैनचेस्टर जैसी उन्नत किस्म की मिलें स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने इंग्लैण्ड जाकर भारत द्वारा निर्यात की जाने वाली कपास की सफाई, कताई, बुनाई का कार्य देखा। उन्होंने पाया कि सस्ते दर पर खरीदी गयी भारतीय कपास से बने इन मिलों के कपड़े भारत में बहुत ऊँचे दामों पर बेचे जाते हैं। इस बात से इन्हंे बहुत दुःख हुआ। जमषेद जी ने दष्ढ़ निष्चय किया कि वे ऐसी मिलें भारत में भी खोलेंगे।

जनवरी 1877 ई0 में इन्होंने नागपुर में ’इम्प्रेस मिल’ नाम की सूती मिल खोली। आरम्भ में जमषेद जी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वे बिना घबराये, धैर्य व निष्ठा के साथ अपने कार्य में लगे रहे। उन्होंने अपने कारखानों में नई तकनीकों और नई मषीनों का प्रयोग किया। उद्योग स्थापना के मूल में स्वदेषी वस्तुओं के अधिक से अधिक प्रयोग की भावना काम कर रही थी। जमषेद जी भारतीय खनिज सम्पदा और पूँजी का उपयोग भारत में ही करने के पक्षधर थे। ’स्वदेषी मिल लिमिटेड’ नामक मिल की स्थापना के पीछे भी यही देष प्रेम की भावना काम कर रही थी। वे भारतीय उद्योग को विष्व व्यापार में सम्मानित स्थान दिलाना चाहते थे।

नागपुर कपड़ा मिल की स्थापना के मात्र तीन वर्ष बाद ही सन् 1880 ई0 में जमषेद जी के मन में इस्पात उद्योग शुरू करने की अभिलाषा उत्पन्न हुयी परन्तु अंग्रेज सरकार से इतने बड़े उद्योग की स्वीकृति मिलना आसान नहीं था। इसके लिए उन्हंे काफी संघर्ष करना पड़ा। अन्ततः कई वषाें बाद उन्हंे सरकार की तरफ से अनुमति मिल गई। अभी भूगर्भ विषेषज्ञों द्वारा खनिज सर्वेक्षण का कार्य चल ही रहा था कि जमषेद जी का देहान्त हो गया।

जमषेद जी के बाद उनके पुत्र दोराब जी टाटा व रतन जी टाटा ने अपने पिता के अधूरे सपनांे को पूरा किया। सन् 1911 ई0 में लोहा और इस्पात के कारखाने की स्थापना के साथ ही टाटा का महान स्वप्न पूर्ण हुआ। बिहार में साकची गाँव के घने जंगलों को साफ करके यह कारखाना ’टाटा आयरन एण्ड स्टील मिल्स’ स्थापित किया गया। अब यह क्षेत्र

एक महानगर के रूप में बदल गया है। इसका नाम उन्हीं के नाम पर जमषेदपुर रखा गया है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. जमशेदजी ने चीन और इंग्लैंड की यात्रा क्यों की ?
2. जमशेदजी की 'स्वदेशी मिल' की स्थापना का क्या उद्देश्य था ?
3. जमशेदजी ने मुख्यतः किन उद्योगों की स्थापना की ?

4. सही (√) अथवा गलत (x) का चिह्न लगाइए-

(क) जमशेदजी का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था।
(ख) नसरवानजी अपना व्यवसाय विदेशों में भी फैलाना चाहते थे।
(ग) जमशेदजी को व्यवसाय में रुचि नहीं थी।
(घ) लंकाशायर और मैनचेस्टर वस्त्र उद्योग के मुख्य केंद्र थे।

5. समूह से अलग शब्द को छाँटिए-

(क) व्यापार, बिक्री, विदेश, बाजार
(ख) प्लास्टिक, कपास, रेशम, ऊन
(ग) लंकाशायर, मेनचेस्टर, नागपुर, जमशेदपुर

6. सही जोड़े बनाइए-

(क) वे तेरह वर्ष की अवस्था में जमशेदपुर
(ख) उन्होंने चीन में रहकर जनवरी सन् 1877 ई0
(ग) इंप्रेस मिल मुंबई (बंबई) आ गए
(घ) इस्पात उद्योग अर्थ और व्यापार व्यवस्था का अध्ययन किया।

7. अपने गाँव/नगर के किसी उद्योग के बारे में लिखिए।